राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 9 **अंक : 103** **15 नवम्बर 2005**

सदस्यता शुल्क : ______ वार्षिक : रुपए 40/-

भारत व नेपाल में एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	ध्यानाकर्षण बिन्दू	28
3.	विशेष सूचना	28
4.	सत्संग (महर्षि शिवव्रतलाल जी)	29
5.	अनमोल वचन व ज्ञान सार	30
6.	सत्संग भावांश	31
7.	सतगुरु कृपा	33
8.	कांटों की झाड़ी (कहानी)	35
9.	भोग (कहानी)	36

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइट:- www.radhaswamidinod.org
इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

भिवानी : कैसेट क्रमांक : 114

दिनांक : 10 जुलाई, 1993

समय : रात्रि

सुख सागर में आय के।। मत जाइए हंस पियासा।।
अनहद कूप भरे घट भीतर, पी ले सांसं सांसा।
जो पीवै सो जुग-जुग जीवै, होत न कबहु विनासा।।
इस रस कारण हुए न प योगी, त्यागे भोग विलासा।
गुरु दादू प्रसाद को चुन के, पी गए सुंदर दासा।।

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों ! यह शब्द मैंने कई बार खोल कर बताया है। **सुख सागर में आए के मत जाइए हंस पियासा।** यह भी आप लोगों को पता है कि सुख सागर किसे कहते हैं। न तो ये संसार सुख सागर है और न ही विषय विकार। अगर सुख का सागर है तो परमात्मा का नाम है। सुख का सागर है तो शांति है। महात्मा कहते हैं कि संत है तो सहन करना सीखो।

सुख का सागर तो तुम्हारे अंदर है। अगर तुम सोचो और उस रास्ते पर चलो तो। कितनी–कितनी बातें हो जाती हैं। शांति तो सुखसागर में ही आकर मिलती है और तो कहीं शांति नहीं मिलती है। आप कहोगे कि यह शरीर क्या सुख सागर नहीं है। इस शरीर में तो पता नहीं कितनी आफतें लग जाती हैं। जब तक हम छठे चक्कर से नीचे बैठे हैं हम सुख सागर में नहीं हैं। जब हम सतगुरु

की दया से छठे चक्कर से ऊपर चले जाते हैं, हम फिर सुखसागर के यात्री बन जाते हैं। उस वक्त हम बड़ी डुबकियां लगाते हैं। फिर हम सुखसागर से बाहर नहीं आते हैं। उस सागर में बड़ी भारी शांति है। आप कहोगे कि किस तरह? यह तो आपको रोज ही बताया जाता है कि छठे चक्कर से नीचे सुख सागर नहीं है। इसलिए ये न्यारी–न्यारी ही बातें हैं। फिर छठे चक्कर से ऊपर भी जाते हो। असलियत में तो सतखण्ड से नीचे सुख सागर नहीं है। ये तो पिंड बताया जाता है। इससे ऊपर ब्रह्मण्ड में भी सुख सागर नहीं है। वहां भी आना जाना है। जब पारब्रह्मण्ड में पहुंच जाओगे तब सुख सागर में पहुंच जाओगे। सुख सागर का मतलब है कि हम इस संसार में बार–बार न आएं। न हम जन्म लें। रोज–रोज के जन्म मरण से पीछा छुट जाता है। पर कब छुटेगा और सुखसागर कहां बताओगे? क्या इस संसार में सुखसागर है? क्या किसी को इस संसार में सुख सागर महसूस हुआ है तो। किसी को पुत्रों का दुख है। किसी को धी–जंवाइयों का दुख है। किसी को कोई दुख है और किसी को कोई। किसी को बीमारी का दुख है। पर मैं बता देता हूं कि जो सुखसागर में पहुंच जाते हैं उन्हें भी, जब वे नीचे उतर आते हैं तो दुख बन जाता है। कोई न कोई ऐसी बात हो ही जाती है।

मैं एक बार होशियारपुर गया हुआ था। वहां महाराज पं० फकीरचन्द जी ने कहा–बेटा ! मैं राधास्वामी धाम से आया हूं और मैं सतपुरुष का अवतार हूं। पर उन्होंने एक बात कही कि मैं बीस पच्चीस दिन से बीमार हूं। मेरी सुरत अन्दर नहीं जाती है। ये लोग कहते हैं कि हमारी सुरत चढ़ जाती है। पर मेरी तो नहीं चढ़ती है बेटा ! अब मैं बीमारी में पकड़ा हुआ हूं। तो क्या मैं अब सुख सागर में हूं? अब बताओ, आप क्या कहोगे? वे थे तो सुख सागर में ही जब व त्ति नीचे उतर आती है तो वह दुख सागर में फंस जाती हैं।

उसी व त्ति को दुख–सुख पाकर छठे चक्कर से ऊपर ले जाते हैं तो फिर हम सुख सागर में चले जाते हैं। मैंने कई बार सत्संग किया है कि सुखसागर तो यह शरीर है। पर आज मैं आपको एक बात बताता हूं कि इस शरीर के भी तीन हिस्से हैं। बल्कि तीन भी नहीं है। चार हिस्से हैं। एक पिंड, एक ब्रह्मंड और एक पार ब्रह्म है। पर सीधे शब्दों में इसको स्थूल, सूक्ष्म, कारण और महाकारण कहते हैं। अब इनका न्यारा–न्यारा निर्णय करता हूं। बताओ आप किस में सुख सागर मानोगे? अगर मैं स्थूल में कहूं तो क्या किसी को स्थूल में सुख सागर दिखता है? कितनों को ही पूछ लो स्थूल में सुख सागर नहीं है।

सत्संगियो ! मैं सीधा सा आदमी हूं, अपनी बातें बता देता हूं। मैं ऐसे गुरु का शिष्य हूं जिन्होंने यही कहा था कि बेटा ! सीधी और सच्ची बातें कहना। यही फकीर जी ने कहा था, संत ताराचन्द! तू एक बात से प्यारा लगता है कि तू सच्चा आदमी है। मैं हर एक सत्संगी को अपना पेट उघाड़ कर दिखा देता हूं। मैं सीधा हूं। मैं छोटी उम्र में बड़ा भारी दुख में पड़ा था। क्या मैं उस दुख को बरदाश्त करता रहता हूं? कितना सुख सागर था? फिर मैंने इन महात्माओं का संग ले लिया। महात्माओं का संग करते–करते ही मैंने बड़े भारी दुख देखे। पर उन महात्माओं की दया से बेड़ा पार उतरता रहा। मैं सुखसागर की बातें कहता हूं। स्थूल शरीर में तो सुख सागर नहीं है। क्योंकि यह तो पांच तत्व का बना हुआ है। जल, प थ्वी, अग्नि, वायु, आकाश। इनमें से एक तत्व भी खराब हो जाता है तो यह शरीर भी खराब हो जाता है। फिर वह सारा ही सुख सागर नष्ट हो जाता है इस शरीर में। अब आप यह कहोगे कि पहले तो आप शरीर में ही सुख सागर बता रहे थे। पर मैं तो अब भी शरीर में ही सुखसागर बताता हूं। पर मैं अपनी बातें बताता हूं कि कई लोग सुख सागर से बिछुड़ जाते हैं। महात्मा भी बिछुड़

जाते हैं। मैंने एक महात्मा को देखा, वह अपने आप को परमहंस कह रहा था और सोहम् का जाप कर रहा था। सोहम् कहते हैं कि तू भी ब्रह्म है और मैं भी ब्रह्म। सोहम् का जाप बड़ा ऊंचा है। मामूली नहीं है। पर संतमत से नीचा है। यह परमहंस की गति का था। एक बार ऐसी घटना घटी कि उसका लड़का गुजर गया। उसने दीवार से टक्कर मारी। उसने कहा–लोग तो यही कहते थे कि फलां आदमी तो संत है। परम संत, हंस, परमहंस है। क्या जो दिवारों को टक्कर मारता है, संत है? कमाल की बातें हैं? संत तो मास्टर राम सिंह हैं। इनके दो–दो बेटे गुजर गए और इनका नाम लेवा और पानी देवा भी नहीं रहा। फिर भी आंखों में आंसू नहीं लाए और प्यार से जिन्दगी बिता रहे हैं। सत्संग करते है। संत तो ये हैं। संत तो उसी को कहते हैं जो सहन करता है। पर स्थूल शरीर में जब तक जीव रहेगा तब तक तो कोई न कोई दुख पड़ सकता है। इस स्थूल शरीर की महिमा क्या है? यह पांच तत्व का है, स्थूल है और स्थूल खुराक से ही यह ठहरता है। जब तक इसको स्थूल खुराक नहीं मिलेगी, यह शरीर ठहर नहीं सकता है। पांचों तत्वों को भी तरतीब से रखना पड़ेगा। अगर एक तत्व भी कम ज्यादा हो गया तो मर जाओगे। इसीलिए सतगुरु की शरण लेकर विचार करना पड़ता है। तत्व के बारे में बातें तो मेरे अंदर आई हुई थी। ये मैं फिर से कहूंगा। अब इन पांचों तत्वों को छोड़कर चल देते हैं तो आप कहोगे कि ये पांचों सूक्ष्म तत्व कैसे बने। आप जहां बैठे हो यह प थ्वी तत्व स्थूल है। यह बाहर अग्नि तत्व स्थूल है। वायु, जल तत्व स्थूल हैं। इनसे कितना काम लेते हो? यही पांचों तत्व सूक्ष्म होकर हमारे शरीर में आ जाते हैं। इस पिंड देश से आगे जब सुरत जाती है तो वही पांच तत्व वहां न्यारे हो जाते हैं। जब यह पिंड को छोड़ कर ब्रह्मंड में चलती है वहां सतरह तत्व होते हैं। उन सतरह तत्वों की आज भी महात्मा

सतरहवीं करते हैं। कई महात्मा मर जाते हैं तो सतरहवीं करते हैं। अरे ! मरने के बाद नहीं, सतरहवीं तो जीवित रहते ही होती है। हमारे ऋषि–मुनियों का नेम था, कोई मर जाता था तो तेरहवीं करते थे। अरे तेरहवीं तो मुर्दो की होती है। तो ये तो मुर्दा थे। ये मर गए। ये क्या करके मरे? कहते हैं–

पहले मरना सो ही मरना। पीछे मरना विपत का भरना।।

जो पहले मर जाता है, वही तेरहवीं करवा सकता है। नहीं तो तेरहवीं होती ही नहीं है। जो पहले अपनी सतरहवीं कर लेता है उसी का नाम महात्मा है। वही परम हंसों की गति है। पर वह सतरहवीं क्या है? मैंने कई बार आपको बताया है। सतरहवीं यह है कि पांच ज्ञान इंद्रियां हैं, पांच कर्म इन्द्रियां है और चार अन्तःकरण तीन गुण–रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण। जब तक तीन गुणों में रहोगे तब तक कभी भी शांति नहीं आएगी। **तीन गुणों की भक्ति में फंस रहा संसार।** मैं संत मत की बातें करता हूं। ये सतरह तत्व माने गए हैं। इनको ही सतरहवीं करना कहते हैं। जब हम इन 17 को त्याग करके आगे निकल जाते हैं उसका नाम सतरहवीं करना है। स्थूल शरीर से आगे वह सूक्ष्म शरीर या उसे लिंग शरीर भी कहते हैं। वहां चला जाता है। वह देवताओं का शरीर है। उस शरीर में जाकर हम वासना का आहार करते हैं। इसे ही देवताओं का लोक कहते हैं। जब और अधिक सूक्ष्म होकर के जीवात्मा 17 तत्वों से और आगे चली जाती है तब नौ तत्व रह जाते हैं। मैं पढ़ा लिखा तो नहीं हूं। सीधी बातें ही कहता हूं। नौ तत्वों में शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध और चार जो रहते हैं वे हैं–मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। इनसे आगे चले जाते हैं तभी कहते हैं–

मुरलिया बाज रही कोई सुने संत धर ध्यान।
जिन जिन सुनी ये बंशी, मरे सब उनके मान।।

जिन्होंने अभ्यास करके यह बंसी सुन ली उनके मन के मान

मर जाते हैं। वह नौ तत्वों से आगे निकल जाता है। यहां तक भी दुख ही दुख है। आगे जाकर पांच ही तत्व रहते हैं–

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध। जब सार गुण में जाते हैं तो एक ही तत्व रह जाता है। ये संतमत की बातें हैं। इसे कहते हैं कि तीन चीजें अमर हैं–जीव, ईश्वर और प्रक ति। संतमत के हिसाब से तो एक शब्द ही अमर है। शब्द के विषय में तो संतों ने बहुत कठोर बातें कही हैं–

शब्द गुप्त जब रहा अनाम।
शब्द प्रगट जब धरिया नाम।।

जब तक वह शब्द गुप्त था तब तक तो अनाम था और वही शब्द जब प्रगट हो गया तो नाम रखे गए और नौ शब्द बना दिए। सो जब शब्द गुप्त होता है, तब दूसरी ही बात होती है। उस वक्त क्या होता है? प थ्वी तत्व, जल तत्व में समा जाता है। जल तत्व, अग्नि तत्व में समा जाता है। अग्नि तत्व, वायु तत्व में और वायु आकाश में समा जाती है। सो एक शब्द ही रह जाता है। नानक साहब ने इसी आधार पर तो कहा है–

शब्द ही धरती, शब्द ही आकाश।
शब्द ही शब्द भया प्रकाश।।
सगली स ष्टि शब्द के पाछे।
नानक शब्द घटे घट आछे।।

उन्होंने सारा खेल ही उस शब्द का बता दिया है। सो इन तत्वों से आगे निकलो। अब मैंने आपको तीन चार चीजें बता दी हैं–स्थूल लिंग (सूक्ष्म), कारण बता दिया। एक महात्मा ने मेरे सामने कहा था कि शरीर तो तीन ही होते हैं। मैंने कहा–नहीं, शरीर चार भी होते हैं। उसने कहा–एक आदमी ने तो पांच भी बताए हैं। मैंने कहा कि पांच भी होते हैं। सो चार का वर्णन तो हर

एक कर देता है, पांचवें तत्व तक तो कोई भागी ही पहुंचता है। तीन का वर्णन तो सभी करते हैं। पर कुछ चौथे का भी वर्णन कर देते हैं। जो तीन गुणों से आगे निकल जाता है वह चौथे में भी पहुंच जाता है। सो चौथे लोक में जाने के बाद शनै–शनै गहराई आती है। पर मेरा प्रसंग तो यही था कि उस सुख सागर में जाकर के दुख नहीं रहता है। मैं एक महात्मा की बातें बताता हूं। कोई ब्राह्मणी थी। ऐसे आदमियों का नाम लेना भी बड़े पुण्य की ही बात है। उसको पांडों ब्राह्मणी कहा करते थे। एक रामजीलाल से उस ब्राह्मणी ने नाम ले लिया। उस रामजीलाल ने बाद में मेरे से नाम लिया। तो उस ब्राह्मणी ने नाम ले लिया। वह बड़ी भारी अभ्यासिन थी कि उसने शाम को अभ्यास किया और सुबह ही चोला छोड़ गई। उसके पोतों की बहु भी आई हुई थी। वह बराबर काम किया करती थी। मैं सुनी हुई बातें कहता हूं। एक दिन वह भोजन करने लगी तो उसकी खीर के ऊपर राख बिखेर दी। राख छानी हुई थी। उसने मस्त होकर उस खीर को खा लिया। वे यही सुना करते थे कि इसकी सुरत चढ़ी रहती है। लोगों ने पूछा–कैसा आनन्द आया? उस ब्राह्मणी ने कहा–ऐसा मजा तो कभी जिन्दगी में ही नहीं आया। अब उसकी जिन्दगी में कौन राख डाल सकता था। इसे कहते हैं–

सुख सागर में आए के, मत जाइए हंस पियासा।

जो सुख सागर में आ जाता है तो इन बातों को वह भूल जाता है। नीचे उतर कर तो कुछ न कुछ व त्ति बिगड़ जाती है। पर वे नीचे नहीं उतरते हैं। वे अपना सारा काम कर जाते हैं। इसे सुख सागर कहते हैं। मैं इस तरह की और भी कई बातें बता दूंगा। फिर आप क्या कहोगे? उस सुख सागर में जाने पर शांति मिल जाती है। पर आप क्या कहते हो कि क्या मैं सुख सागर में पहुंच गया हूं? आप सब ही यह जानते हो कि मैं पहुंच गया हूं। पर मैं मेरी

अपनी एक अवस्था बताऊंगा तो आप सभी मेरे से घ णा कर जाओगे। मेरे पास भी तुम नहीं आओगे क्योंकि वह सुख सागर में पहुंचने की वह अवस्था नहीं होती है। मैं इसीलिए कहता हूं कि मैं सीधा आदमी हूं। मैं अपनी बातों को छुपाता नहीं हूं। फकीर चंद जी ने कहा–बेटा ! मुझे तकलीफ होती है। तो क्या मैं अनामी धाम में पहुंच गया हूं? मैं तो सतपुरुष का रूप कहता था। सो उन्होंने कहा–क्योंकि तू सच्चा आदमी है, इसीलिए मैं सच्ची बातें कह देता हूं आपके आगे। तू सच्चा है, इसीलिए तुम्हारे ऊपर मेरी दया द ष्टि है कि तू अपना काम करते रहना और संसार में सच्चा होकर ही रहना। मैं आप लोगों को इन बातों के बारे में क्या कहूं? ऐ सत्संगियों ! सत्संगी होना ही बड़ा मुश्किल है। कोई कहता है कि जो सत्संगी बन जाता है। उसका तो उद्धार ही हो जाता है।

बेटे, बाप और सास, बहूओं का बैर चलता है। भाई–भाईयों का बैर चलता है। गुरु चेलों का बैर चलता है। सत्संगी सत्संगी ही आपस में देख कर खुश नहीं हैं। आप इस बात को समझते हो फिर भी कहते हैं कि हम तो सतलोक में पहुंच गए हैं। पर नहीं। ये तो गलत बातें है। सतलोक में नहीं पहुंचते हैं। सतलोक में पहुंच जाते तो तुम संत ही बन जाते। आप प्रश्न कर सकते हो कि फिर हमारा उद्धार किस तरह हो। मैंने आपको कहा था कि यदि एक भी आगे पहुंच जाता है तो करोड़ों का उद्धार हो जाता है। अगर विश्वास और श्रद्धा हो तो। मैं सुख सागर की बातें कर रहा था। मैंने आपको सुख सागर तो बता ही दिया है। इस रस के कारण राजा भी राज छोड़ कर साधु बन गए हैं। उन्होंने अपना सब ही कुछ छोड़ दिया। रानी, भोग–विलास और सभी ऐश आराम छोड़ दिए। साधु बन गए। केवल उस सुख सागर के वास्ते।

ऐ प्रेमियो, सत्संगियो ! मैं भी सुख सागर के लिए निकला था। पर क्या निकला? जब शुरू में निकला तो माईं पूत बिछोवा

हो गया। फिर मेरा बाप भी ऐसा ही था। फिर मैंने महात्माओं की शरण ले ली। उन महात्माओं की शरण में भी पता नहीं क्या–क्या हुआ? मैंने अपनी जिन्दगी में दो चोरियां की और कभी भी कोई चोरी नहीं की। एक बार मैंने डेढ़ सेर बाजरे की चोरी की और एक बार दो घूंघरू चुराये थे। मैं अपने जीवन का तजुर्बा बताता हूं। बाजरा चुराया उसकी सिरटी तोड़ी थी। हम दोनों बाप–बेटा दो दिन से भूखे थे। वे सिरटी भी यह नेम करके तोड़ी थी कि इतना ही बाजरा जब हमारा निकलेगा तब दे दूंगा। मैंने उसको वह बाजरा दिया तो उसने नहीं लिया। घूंघरू चुराये थे। होली के दिन थे। उस समय नाचते थे। मेरे पास एक घूंघरू था। मैं किसी की चौरासी (बैलों के कंठ में बांधने की सिंगार की वस्तु) में से दो घूंघरू निकाल कर ले आया। वे रख दिए। वे दोनों घुंघरू उस एक को भी ले गए। मैंने शाम को देखा तो वह जो मेरे पास एक था वह घूंघरू भी नहीं पाया। तीनों ही चले गए। मैंने कहा–लो भाई ! मैं जो दो लाया था कोई उनको भी उठा ले गया। हालत बताता हूं। मैंने उस दिन सोचा कि क्या तूने चोरी का मजा ले लिया है? सो मैं आप लोगों के सामने बताता हूं कि कभी मैंने झूठ नहीं बोला। मैंने अपने स्वार्थ के लिए तो कभी झूठ बोला ही नहीं है और न ही मैंने सत्संगियों से कभी भी कुछ छुपा कर रखा। मैं दुख का मुकाबला करता रहा।

जीवन में मेरे तन पर कपड़ा नहीं था। मेरा जीवन चरित्र पढ़ोगे तब पता चलेगा। मैं थोड़ा सा बताता हूं। मैं अपने पांव गोबर में भर लेता था। कपड़े फटे रहते थे। कोई कपड़ा था ही नहीं। फिर भी मैं एक दिन गया और तीन दिन काम करके मिट्टी के छ' बैड (बड्डे) खोदे। तीसरे दिन मुझे छः पैसे मिले। मेरी मजदूरी के पैसों को कोई और ही खा गया। जब मेरे बाप ने शोर मचाना शुरू किया तो मैंने कहा कि शोर मत कर। क्योंकि नल राजा की खूंटी

हार निगल गई थी। मेरा वक्त ही ऐसा चल रहा था। उसने कहा–मेरे बेटे के पैसे खा लिए। मैंने कहा–ये तेरे बेटे के पैसे नहीं थे। ये तो पिछली कोई प्रारब्ध ही थी। कोई बात नहीं है। पर मैंने यह कहा कि ऐ मेरे पैसे खाने वाले ! तेरे को शांति नहीं मिलेगी। मैं धर्म से कहता हूं। बारह महीनों तक उसकी वह दुर्दशा हुई कि उसका पेशाब ही बंद रहा। बड़ा दुखी रहा। नलकी से पेशाब उतारते थे। एक दिन यह बात उसने कह दी थी। मैं बुरा बोला नहीं करता था। फिर भी क्या करता। उस समय बहुत दुखी हो गया था। मैंने तीन दिन तक भुने चने (भूगड़े) चबा–चबा कर भूख से मरते हुए मिट्टी खोदी थी। एक बाबा जी ने ही तीसरे दिन ये भूगड़े मुझे दिए थे।

मैं अपनी बीती हुई बातें बताता हूं। मैंने ये दुख झेले। फिर जब आज से 45 वर्ष पहले मेरा सत्संग चला। तब उस वक्त सत्संग हुआ तो आर्य समाजियों ने मेरी बड़ी मुखालफत की। उनका इश्तिहार मेरे पास है। पर उसमें उन्होंने यही लिखा–ये छोरा तो अच्छा है पर मत अच्छा नहीं है। बड़ी भारी मुखालफत हुई। मैं ये झमेले सहन करता रहा। क्या तुम सत्संगी हो? तुम तो मुफ्त के खाबू हो। तुम्हें तो शांति से नाम मिल गया है और शांति से ही सब कुछ मिला है। मैं तो बहुत घूमा। ब्यास में गया। आगरा में गया। गरीबदासियों और दादूपंथियों के पास गया। घीसापंथियों के पास गया। मैंने कोई साधु ही नहीं छोड़ा। बड़े–बड़े महात्माओं के दर्शन किए। उनसे कुछ न कुछ लिया। उन्हीं की दया से ही मैं दुख सहन करता रहा।

वे कहने लगे कि एक मकान देंगे और चालीस बीघे जमीन देंगे। तू राधास्वामी मत को छोड़ कर हमारे पास आ जा। उनमें से एक दो आदमी अब भी जिंदा है। मैंने कहा कि राधास्वामी मत में से जाने पर (छोड़ने से) इतनी चीजें मिलती हैं तो मैं राधास्वामी

मत नहीं छोडूगा। इसमें आगे तो पता नहीं क्या मिल सकता है। मैंने नहीं छोड़ा और उन्होंने बदनामी करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। बड़ी भारी बदनामी की। उस बदनामी को सहता रहा, झेलता रहा। कभी कुछ और कभी कुछ होता रहा। उस वक्त आर्य समाजियों ने जो बदनामी की उसको तो सहता रहा। मैंने रतीराम से कहा कि भाई ! वे तो गालियां देते हैं और बहुत बुरा बोलते हैं। इसने कहा–कोई बात नहीं है। अगर अपने अंदर ऐब हैं तो उसको छोड़ देंगे और अगर ऐब ही नहीं हैं तो बुराई क्या करेंगे? यह बात बड़े गजब की है।

जब हमारे अंदर ऐब ही नहीं है तो हमारी बुराई हो ही नहीं सकती है और जब हमारे अंदर ऐब है तो हमें छोड़ देना चाहिए। लोग बुराई करते हैं, तो तुम छोड़ दो। भई तुम सत्संगी हो। सो मैं उसी बात के आधार पर चलता रहा। आज से 15 वर्ष पहले फिर एक पहाड़ टूट कर पड़ा। मेरे पास कोई नहीं आया और मेरी संगत में खलबली मच गई। मैंने कहा–सत्संगियों ! क्या मेरे ऊपर विश्वास है? उन्होंने कहा–हां, विश्वास है। घबराओ मत। मेरी संगत शांति के साथ उस दुख को सहन कर गई। सत्संग बनते रहे, चलते रहे। दुख आते ही रहे। मैंने अपने दुख किसी को बताए ही नहीं। सत्संगियो ! मैं उस अवस्था से नीचे आया तो मैं दुख पाया। मैं कह रहा था कि सुख सागर में आकर। मैं सुख सागर में नहीं गया। उस अवस्था में दुख सागर में चला गया। परवाह नहीं की। अब क्या घटना घटी? क्या उस हाल का आप लोगों को पता है? मेरे साथ क्या बीत रही है? उन लोगों ने मेरे साथ क्या कर रखा है? पर सत्संगियों ! इस बात को बरदाश्त करना हंसी खेल नहीं है। पर मुझे एक शांति मिलती है कि पलटू जी को उबलते तेल में डाल दिया था। गुरु तेग बहादुर जी का सिर उतार दिया था। गुरु अर्जुन साहब दरिया में गोता मार गये। गरीबदास

जी को गांव से निकाल दिया गया। मैं भी निकल गया था गांव से एक बार।

किसी ने मेरे विरोध में इश्तिहार निकाल दिया। जिसने विरोध में इश्तिहार निकाला था उसकी स्त्री भी पागल होकर कुएं में गिर गई। उसके घर लड़का था वह तो मेरे पास आ गया। मैंने फिर भी उसको सेर घी दिया। गांव वाले जानते हैं। क्यों दिया? क्योंकि अपनी आदत नहीं छोड़नी चाहिए।

जो आ जा हानि, तो मत छोड धर्म की बान।

मुझे ये बातें सुनते सुनते बहुत समय बीत गया। मैंने सावण सिंह जी महाराज की बातें सुनी कि आर्य समाजियों ने सवा लाख रुपए इकट्ठे किए और उनको इतना भारी परेशान किया कि बेहद। फिर ऐसा टाइम भी आया कि सावण सिंह जी पर झूठे केस बना दिए। उनका एक वकील आ गया। वकील ने सावण सिंह जी को कचहरी में तो नहीं जाने दिया। वह तो पंजाब है। उन्होंने बहुत दुख झेले। क पाल सिंह ने लाठियां सहन की वे इतने तगड़े गुरुमुख थे। जब यह सब हुआ तो उनका एक लाख रुपया बर्बाद हो गया। आखिर में आर्य समाजियों की नकली चिट्ठी पकड़ी गई। फिर वकील ने कहा–बाबा सावण सिंह जी अब चार हजार आदमियों की जेल हो सकती है जो लोग आपके विरोध में थे। एक बार जाकर अदालत में यह कह दो कि यह चिट्ठी झूठी है और उन पर इज्जत हक मान हानि का दावा कर दे। उन्होंने कहा कि मैं तो जेल से निकालने के लिए आया हूं। जेल में फंसाने के लिए नहीं। वे पहुंचे हुए थे। मैंने भी ख्याल बहुतेरे किए। मैंने सोचा, इनको कर लेने दे, तेरा ये क्या लेंगे? एक दिन मुझे नींद नहीं आई। फिर मैंने होश किया। अरे पगला ! तू घबरा गया है। वाह तू संत कहलाता है और तू घबरा गया है। यह प्रश्न मैंने आत्मा से किया। तू यह बता कि जिसने तेरे साथ झगड़ाबाजी की और

मुकाबला किया उसने नीचा देखा या नहीं? जैसे मेरे साथ कोई बात कर रहा है। ऐसे मेरी आत्मा ने मेरे साथ बातें की। उन्होंने तो नीचा ही देखा। मैंने कहा–देखा और उन्होंने हार भी मानी। सो अपनी चाल को मत छोड़ और घबराना नहीं है। पता नहीं क्या–क्या आफतें आ जाया करती हैं। तेरा सिर तो किसी ने नहीं लिया। सत्संगियों! मैं एक बात कह देता हूं। अगर मेरी बात पर यकीन हो तो मान लेना। अगर मेरे अंदर दो चीजें मिल जाएं तो तुम मेरा मुंह देखोगे तो सब नर्क में चले जाओगे। ये दो चीजें मेरे अंदर मिल जाएं तो मेरा मुंह न देखना कभी भी। मैं सत्तर वर्ष का हो गया हूं। आज तक तो ये दो चीजें हैं नहीं और आगे मिल जाएं मेरे अंदर तो मेरे पास मत आना कोई भी। पर पक्की इन्क्वायरी करके बात करना। एक तो यह कि मैं किसी लड़की का हाथ पकड़ कर कमरे में ले जाता हूं या कमरे में अकेला किसी लड़की से बातें करता मिल जाऊं और दूसरी बात यह है कि नशे, विषय हों, और दो नम्बर का काम करता हूं। आज तक मैंने चार पैसे लेने की कोशिश नहीं की है। ऐसी बात हो तो क्या इस डेरे के बनने में इतने दिन लग जाते? किसी के इस तरह के गुरुद्वारे दो साल में बन जाते हैं। पर मेरी सीधी सादी गरीब संगत ही मदद कर रही है। ये बातें कभी भी नहीं मिलेंगी। अगर नशे विषय की बात मुझ में मिल जाएं तो मेरा मुंह न देखना कभी भी। मैंने आज तक न तो नशों का काम किया है और न नशे वाले की रोटी ही खाई है। ध ोखा अगर हो गया तो फिर मुझे पाप नहीं उसका। यह मेरे गुरु का वचन था। पर यह बता देता हूं कि जिसने बुराइयां की वे खुद ही गिरते गए। दरबार की चोरी करता गया वह भी गिरता गया। मैंने कभी नहीं कहा कि कोई फलां चीज को उठाकर ले गया और न ही यहां पर किसी को कहने देता हूं। कभी मैंने यह नहीं कहा कि उसका यह हो जाए। उसका फैसला तो अपने आप ही हो

जाता है। आप भी यही विश्वास रखना। ये मैंने अपनी बातें बताई हैं। मैं उस सुख सागर से नीचे गिर गया। सुख सागर से कभी भी नीचे नहीं गिरा था। क्यों गिर गया? मेरे दिमाग में एक बात आई कि अरे पगला! तेरी सारी जिन्दगी ही गुजर गई पवित्र टाइम बिताते बिताते। धड़ल्ले से कहता रहा और मैं आज भी कहता हूं कि मैं शराबी–कबाबियों या नशे–विषय करने वालों के घर का पता लग जाए, शराब सुल्फे बेचने वाले के घर की रोटियां खाना मेरे लिए गौ का मांस खाना है। मैं सच्चा आदमी हूं। मेरे गुरु ने यह नेम कराया हुआ है। बताओ, मैं हिन्दू की औलाद हूं। मैं सच्ची बातें कहता हूं। इन चीजों का मुझे पता भी नहीं है। लोग दोष लगाना शुरू कर देते हैं तो फिर क्या हुआ? सो मैं तो सीधे शब्दों में कह देता हूं कि मेरे पास आओ कोई। आने वाले की चौंध खुल जाती है। जब कोई आता है तो आगे से जवाब नहीं आता है।

सत्संगियो कभी न घबराना। कोई बात हो तो गर्दन पकड़ लेना। कह देना आओ भाई सुनाओ। हम भी सुनना चाहते हैं। चल तू अब आगे होकर चल। आगे चलकर पूरी बात कर लेना। आगे कोई बोल नहीं सकेगा। मैंने दो बातें बताई। जिसमें ये बातें नहीं तो समझो उसका सिंगार भी नहीं है। जिसमें ये दो बातें नहीं आ जाती हैं, वह गिर जाता है। मेरे सतगुरु की दया अपार थी। इसलिये मैंने अपनी बातें बताई। मैं उस दिन सुख सागर से गिर गया। पर फिर भी मेरी आत्मा ने प्रश्न किया कि तू क्या करता है? क्या तू गिरता है? होश कर। मेरे पास मेरा मास्टर था। इसने कहा–क्या बात है? मैंने कहा–कोई भी बात नहीं है। यही बातें हुई थी? इसने कहा–वाह ! आप तो संत हो। मैंने कहा–संत भी गिर जाते हैं। सतलोक में रहते हैं तभी तक वे संत रहते हैं। जब नीचे उतर जाते हैं तो संतपना खत्म हो जाता है। संसार दुश्मन है। महात्मा गांधी ने इस संसार का कितना भला किया? उनको हमने

गोली से मार दिया। यह संसार तो ऐसा बुरा है। ऋषि दयानन्द ने इस संसार का भला किया। शीशा देकर मार दिया। गुरु नानक जी से चक्की पिसवाई। गुरु गोविन्द सिंह जी के बच्चे दीवार में चिन दिए। इन पापियों ने गुरु तेग बहादुर का सिर उतार दिया। गुरु अर्जुन देव जी की क्या दशा हुई? गुरु रविदास जी के हाथ कटवा दिये इन पापियों ने। मैं कितनों की बातें बताऊं? दादू जी से क्या करवाया? तुलसी साहब से चक्की पिसवाई। इन महात्माओं के साथ बड़े बुरे बर्ताव हुए। मैंने ये बातें सोचकर कहा–अरे पगला! तेरे तो किसी ने हाथ नहीं काटे। तेरा किसी ने सिर नहीं काटा। तेरे साथ क्या किया है? फिर तू इतना फिक्र करता है। सो मैं वापिस हुआ तो फिर सुखसागर की तरफ चल पड़ा। नहीं तो उस सुखसागर से गिर गया था। कोई आफत आ जाती है तो गिर जाते हैं। फिर सतगुरु दया करता है तो संभल जाते हैं। कभी मैं अपनी जिन्दगी में घबराया नहीं चाहे कितने ही दुख आए। घबराता तो अब भी नहीं हूं। ये तो मैं अपनी सच्ची बातें कह देता हूं। एक आदमी ने कहा–महाराज जी ने चोरी की थी। वह कहता था कि चोरी कर लिया करो। अरे भले आदमी ! मैंने कब कहा है कि चोरी कर लिया करो? मैनें क्या ऐसा कहा है? मैं तो खुद कहता हूं कि मैंने भी चोरी की थी। पर ये तो गिरने की बातें हैं। चोरी तो भाई भूखे मरते हुए ने ही की थी। तुम भूखे मरते हो तो कर लेना। धपे छके हुए तो चोरी मत करो।

दूसरी बात यह है कि आश्रम का यह नेम है कि यहां से कोई चीज चोरी हो जाएगी तो मुझे आशीर्वाद मिला हुआ है। किसने दिया? फकीर ने कहा था कि बेटा ! मैं परमसंत हूं। मैं गौड़ ब्राह्मण हूं। छाती में हाथ मार कर कहा था। मैं राधास्वामी धाम से आया हूं। मेरी बात पर यकीन रखना। मैंने कहा–बोलो। उन्होंने कहा–अगर तुम्हारी एक चीज चोरी होगी तो सतरह चीजें आयेंगी। हाय–हाय

मत करना। आपकी जो भी बुराई करेगा, वह गिर जाएगा। कुछ दिन में ही पता लग जाएगा। पहला बुराई करने वाला तो हमारे आश्रम में माफी मांग गया। सभी माफी मांग मांग कर गए। उसके ऊपर तो मेरे सत्संगी भी मुझ से नाराज हुए कि क्यों इसको आने दिया। क्यों इसको इतना कुछ दे दिया? अरे भई ! कोई आता है तो कुछ लेने के लिए ही आता है। कहते हैं कि अपनी अच्छी आदत को न छोड़ो। तुम सत्संगी हो। सत्संगी की तरह से रहो। सुख सागर में रहना बड़ा मुश्किल है। इस शरीर में भी सुख सागर नहीं है। छठे चक्कर से ऊपर जब व त्ति चली जाती है, तभी सुख सागर है। जब किसी आफत में व त्ति उतर आती है तो वह नीचे गिर जाता है। कोई भागी ही अपना ख्याल कर ले और ऊपर चला जाए तो बच जाता है। ये मैंने आपको अपनी बातें बताई। तुम्हारा तजुर्बा नहीं होगा। मैंने तो अपना तजुर्बा ही बताया है। एक दिन किसी ने कहा कि सतलोक में चढ़ने के बाद गिरता नहीं है। दूसरे ने कहा–गिर जाता है। मैंने सोचा कि देख तो लूं। ये बहुत पुरानी बातें थीं। वे दोनों गुरु भाई थे। दोनों की बातें चल रही थी। मैंने देखा और सोचा कि गिर भी जाता है। सतलोक में चढ़ा हुआ भी अगर छोटी–मोटी बातों पर नीचे आ जाता है तो वह गिर जाता है। उसको झटका लग जाता है। मैं यह नहीं कहता हूं कि वह लूट जाता है। पर झटका लग जाता है। जैसे कोई कहे कि विश्वामित्र गिर गया था। विश्वामित्र को झटका लग गया। वह गिरा नहीं। कहते हैं कि दुर्वासा गिर गया। नहीं! उसे भी झटका लग गया। इसी प्रकार से श्रंगी ऋषि को झटका लग गया था। ये ऐसे झटके तो ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी को भी लग गए थे। ऐसी बातें सत्संग में बताई भी थीं। सब को ही झटके लग जाते हैं। वे गिरते नहीं हैं यह न सोचना कि वे लुट गए। नहीं। उनकी ताकत तो ज्यों की त्यों

थी। झटका लग जाता है। पर जो सतलोक में पहुंच जाता है, उस सुख सागर में पहुंच जाता है उसको झटका नहीं लगना चाहिए। अगर झटका लग भी जाता है तो सुखसागर में जल्दी चले जाओ। सुख सागर किसे कहते हैं? जब तुम अपनी पुतली मोड़ कर प्रकाश को देखते हो और उस शब्द की धुनि को सुनते हो उसे सुख सागर कहते हैं। उसी में से यह जीवात्मा (सुरत) आई थी और दुख सागर में फंस गई। जन्म मरण में फंस गई। जब तक यह तीन गुणों में रहेगी, इसका जन्म मरण छुट नहीं सकता है। जब इन तीनों गुणों से निकल कर उस शब्द में चली जाएगी यह सुखसागर में पहुंच जाएगी। फिर वापिस आने की जरूरत नहीं है। वापिस आना क्या है? कि दुख–सुख का ज्यादा ख्याल नहीं करना है। जब भी कोई बात होती है तो वे अपनी व त्ति को मोड़ लेते हैं। ऊपर चले जाते हैं, उस सुख सागर में आत्मा पवित्र हो जाती है। जो पवित्र होता है वही जाता है। अगर तुम संकल्प विकल्प उठाते रहे और खराब गुनावनें उठाते रहे तो वहां नहीं जाओगे। पर फिर तुम्हारा प्रश्न है। मैं अपने आप ही करता हूं–फिर हम कैसे करें? गुनावनें किस तरह मिटेंगी? ऐसा तो आप लोगों में से मेरे पास कोई आ जाता है तो मैं अपना तजुर्बा बताता हूं।

जब भी तुम्हारे ध्यान में बैठे–बैठे गुनावनें उठती हैं तो एक काम कर लो बस गुनावनें तो बंद हो जाएंगी। मन जहां भी जाता है उसे मोड़ लाओ। मैं आपको सत्संग कराता हूं। मन जहां जा रहा हो उसको मोड़ लाओ। फिर निकलता है तो फिर मोड़ लाओ। उस मन को कहीं भी घर न करने दो। ये गुनावनें तो अपने आप ही मिट जाएंगी। अगर तुम्हारी इतनी ही हिम्मत नहीं है कि मन को मोड़ लो तो फिर गुनावनों को उठने दो। सुमरन का तार मत टूटने दो। गुनावनें उठने दो और सुमरन तार मत टूटने दो। देखो फिर

तमाशा तुम साबुन भी लगाते हो और पानी भी डालते हो। मोगरी की चोट मारोगे तो कपड़ा आप ही सफेद निकल आएगा। ये गुनावनें शनैः–शनैः खत्म हो जाएंगी। ये गुनावनें क्या हैं? ये हमारा पिछला पाप होता है। वे हमारे पाप आहिस्ता–आहिस्ता सभी निकल जाएंगे और हमारी आत्मा साफ हो जाएगी। साफ हो जाएंगे तो सारा जीवन ही पवित्र हो जाएगा। अगर तुम्हारे अंदर उसे मोड़ने की ताकत ही नहीं है तो इसे सत्संग कहते हैं अगर करो तो। सत्संग तो उन्हीं के लिए है, जिन्हें अपने घर जाना है। जिन्हें दुनिया खानी है और इसकी ऐश लेनी है उनके लिए सत्संग नहीं है। मैंने अपने जीवन की बातें बताई हैं और मैंने अपने जीवन को पवित्र रखा है। आप कहोगे कि आप तो अपने मुंह के मिट्ठू हो, अपने आप ही बड़ाई करते हो। मेरे गांव में जाकर लोगों से पूछना कि आप अपनी सच्ची आत्मा से बताओ। दुश्मन भी गलत नहीं बोलेगा अगर सच्ची आत्मा से पूछोगे तो। ये मैं आपको सही बातें कहता हूं। सच्ची आत्मा से तो दुश्मन भी हो उसे अगर कहोगे कि तेरा वंश उठ जाएगा, सच्ची बताना। तो वह घबरा जाएगा। अपना–अपना वंश तो सभी को प्यारा लगता है। कहेगा ये बातें हैं। वह गलत बता ही नहीं सकता है। क्योंकि मैं गांव का हूं। इसीलिए बताता हूं। बाहर गांव वालों को तो तुम क्या जानते हो? कोई महात्मा बाहर गांव में आकर बैठ जाता है। तुम्हें तो उसका पता ही नहीं है कि यह कौन सा ऐब करके आया है या इसने क्या नहीं किया है। गांव वाले का तो पता ही रहता है। कह देंगे कि कल तक तो यार यह टिकड़े बेचा करता था। सो ये तो कोई बुरा नहीं किया। मैंने भी गोबर इकट्ठा करके गौसे (उपले) बेचे हैं। बताओ, आरणे चुगे और बेचे हैं। क्या मैंने काम नहीं किया कुछ भी? क्या मैंने जैसे आपको बताया टींड नहीं बेचे हैं? मैंने बुरा काम तो नहीं

किया। मैंने तो कमा कर ही खाया। उसी प्रताप से आज तुम्हारे आगे खुला बोल रहा हूं। अगर सतगुरु का हाथ रहा तो खुला ही बोलता रहूंगा। मैं सत्तर वर्ष का हो गया हूं। उस सतगुरु ने मुझे बचा लिया। नहीं तो मैं भी गिर जाता। उन्होंने जो नेम मुझे बताए हैं उन नेमों पर चलता रहा तो बचता रहूंगा। नहीं तो गिर जाऊंगा। आज अगर मेरे सामने आकर बातें करता है तो और ही लोग कह देंगे–अरे पगला ! तू जो ये वचन कहता है क्या कहता है? क्या तुझे शर्म नहीं आती है? अगला आदमी अपने आप ही कहने वाले को ढीला कर देता है। मेरे पास एक प्रेमी आया। उसने कहा–मैंने दो लाख की शर्त लगा ली। यह पिछले दिनों की बात थी। अब दोनों ने शर्त लगा ली। दूसरे ने कहा–तू गिर जाएगा। उसने कहा–क्यों? लड़की के यार वह तो दूध जैसा है। उसने उसी वक्त कह दिया कि पता तो मुझे भी था। शर्त लगाने वाले ने कहा–फिर तू क्यों मरता है। उसने उस को गाली दी और कहा कि मरते क्यों हो? सो ही मैं आपको बता देता हूं। अपना जीवन पवित्र रखो। दूसरा कुछ भी कहता रहे। वह क्या कर सकता है? कोई कुछ बिगाड़ ही नहीं सकता है। जब अपने अंदर कमी आती है तभी कुछ बिगड़ता है।

मैंने एक प्रेमी से बहुत ही अच्छा बर्ताव किया। उसी प्रेमी ने कह दिया कि वहां तो खाने पीने वाले रहते हैं। अरे ! तेरा भी तो कल इतना काम किया था। तू भी क्यों डूबता है? तेरे तो आंसू गिर रहे थे। कल वह तुझे भी देकर गया और तेरा कुछ करके गया। तू कैसे कहता है कि खाने पीने वाले रहते हैं। जो धंधा पीटता है वह खाएगा, पीएगा। गाहटे का बैल गाहटे में ही खाएगा। वहां जो काम करते हैं वे रोटी खाने के लिए कहां जाएंगे? इस आश्रम में जो रहते हैं वे रोटी खाने के लिए कहां जाएंगे? अरे

बेशर्म ! तू क्यों डूबा? तूने यह बात क्यों कही? तेरे ऊपर तो सतरह सौ रुपये खर्च करके गया था। तू गिरावट में आ रहा है। तूने यह बात कैसे कह दी? तेरे तो आंसू पोछे थे। चुप रह गया। इसीलिए प्रेमियों ! अपना काम अच्छा करो। जो चार पैसे ले लेता है अगर वे वापिस नहीं आते हैं तो हाय हाय मत करो। अगर तुमने हाय हाय की तो तुम्हें फिर जन्म लेना पड़ेगा। या तो पहले ही मत दो। सोच लो कि ये आएंगे नहीं। नहीं देते। अगर दे देते हो तो शांति रखो। मैं क्या कहूं? मेरे साथ तो ऐसी बातें बहुत बीती हुई हैं। अगर वह नहीं देता है तो मत दो। एक दो बार कह लो। फिर मत कहो। तुम बार बार कहोगे तो जन्म लेना पड़ेगा। मैं अपने बुजुर्गों की बातें बताता हूं। हमारे गांव के गाड़ी बाहते थे। जब वे गाड़ी को जोड़कर लाए उनकी गाड़ियों के साथ एक बैल आ गया। गांववालों ने कहा कि ये बैल किसका है? उन्होंने कह दिया और ये फैसला कर दिया कि जिस किसी की गाड़ी के साथ यह बैल जाएगा, यह उसी का बैल हो जाएगा। वह बैल हमारे घर के ब्राह्मण थे उनकी गाड़ी के साथ आ गया। उन्होंने कहा कि यह तो बड़ा अच्छा फैसला हुआ कि एक ब्राह्मण को बैल दे दिया। हमें तो शांति है। वह बैल ब्राह्मण के घर चला गया। उसको सभी ने चारा डाला। रात को फिर चारा डाला। रात को स्वप्न में उस ब्राह्मण से बैल बोल पड़ा। उस बैल ने ब्राह्मण से कहा–पंडित जी ! तूने मुझ से चालीस रुपये लेने हैं। वे रुपये वापिस करने के लिए आया हूं। मैंने चालीस रुपये एक बापोड़ा गांव का तेली है उससे लेने हैं। सोचो! मैं क्या कहता हूं? कल वह तेली आएगा। वह तुझे चालीस रुपये देगा, तू ले लेना। पंडित जी ने अपने यजमान बुलाए और उनसे कहा–मेरे साथ तो यह घटना घट गई है रात को। अब बने तो क्या बने? यजमानों ने कहा कि अगर कोई आएगा तो देख लेंगे पण्डित जी। बापोड़ा का तेली आ गया और वे सीधे उसी के पास

चले गए। पंडित ने कहा–बोल क्या देगा? तेली ने कहा कि मैं तुझे चालीस रुपये दूंगा। पण्डित ने कहा कि ला, दे दे। उसने अपने चालीस रुपये ले लिये। अब पण्डित ने कहा कि तूने चालीस रुपये देकर बैल तो ले लिया है। अब तू एक बात सोच लेना यह बैल तेरा मरेगा, जाते ही। तेली ने कहा–मेरा तो रास्ते में ही मरेगा। तेरा तो कोई ठेका नहीं है। बैल साठ रुपये का है। तूने इसके चालीस रुपये ले लिए। अब यू सोचता है कि 20 रुपए सस्ता चला गया। मैं तो अब इसको नहीं छोडूंगा। पंडित ने कह दिया–नहीं, मैंने तो इस बैल से चालीस रुपये लेने थे और इस बैल के तूने चालीस रुपये देने हैं। तेली ने कहा कि देख लूंगा। तेली उसको ले गया और बैल जाते ही मर गया। सुबह ही मरा पाया। हमारे गांव के बुजुर्गों की बातें बताता हूं–

ऐसी ऐसी बातें बहुत हो जाती हैं। कर्जा तो सभी को चुकाना पड़ता है। उनको यह कर्ज क्यों चुकाना पड़ा? इसीलिए कि उसके दिल में ऐसा ख्याल था। मैं लाला जी को बता रहा था कि कोई पैसे लेने के बाद वापिस नहीं देता है तो ये ख्याल मत रखना कि मैं यह करूंगा वह करूंगा। अरे ! क्या बात हो गई? जाने दे, गए तो। ये मांगता था। अगर हाय हाय करेगा तो तुझे उसका बेटा–पोता या धी जंवाई बनना पड़ेगा। फिर भजन काम नहीं आएगा। सो यही सोच लो कि खा लिए, पहले जन्म के मांगता था। कह दो कि मेरे भाई तू मत देना तू फिर न मांगना। सो तुम्हें भी इसी तरह करना चाहिए। तुम सत्संगी हो। वह चीज दी गई तो हाय हाय मत करो। इससे अच्छा पहले ही सोच लो। इससे तुम्हें बार बार जन्म नहीं लेना पड़ेगा नहीं तो फिर जन्म लेना पड़ेगा। भोगना पड़ेगा। अगर तुमने किसी की थोड़ी सी भी चीज खा ली तो तुम्हें ज्यादा देनी पड़ेगी। क्या तुमने देखा नहीं? महाराज सावण सिंह ने लिखा है कि ये लोग कैसे तिरेंगे? एक पैसे की

चीज लेते हैं तो कहते हैं कि इसके साथ रूंगा और दे दे। कई जगह से चीजें लेंगे तो कई रूंगे मांगेगे। बताओ इस तरह से कैसे तिरोगे? हमें तो इतना ही वजन उठाना चाहिए जितनी कि हमारी हिम्मत हो।

एक प्रेमी ने मुझसे कहा कि दूध में भी जीव है। घी में भी जीव है। अनाज में भी जीव है। सब्जी में भी जीव है। उसने सिद्ध भी किया। मैंने कहा–बात बिल्कुल ठीक है। सभी में जीव है। अब बात तो यह है कि किसी में एक तत्व है और किसी में दो तत्व हैं। किसी में तीन और चार, किसी में पांच हैं। आदमी में मुकम्मल पांच तत्व हैं। सो अगर हमारा साग–सब्जी से काम चल जाए तो फिर हम पशुओं को मार कर क्यों खाएं?

इतना ही वजन उठाओ कि तुम दुख न पाओ। अपना जीवन पवित्र बनाए रखो। साग सब्जी में दूध–घी में गुजारा कर लो। इनमें तो थोड़ा थोड़ा ही वजन उठाना है। पर तुम जानवरों को मार कर खा जाओगे तो किस तरह से तिरोगे?

आबी छोड़ पेशाबी खा।
मुक्ति को कहां, सीधा नर्क में जा।।

आबी की चीजें गाजर, मूली, साग सब्जी बहुत हैं। आब तो पानी को कहते हैं। पेशाब की चीजें भेड़, बकरी, भैंस, झोटे, गाय आदि हैं। जितने भी जानवर मुर्गी आदि सभी हैं ये सब पेशाब से बनते हैं। यही कबीर साहब ने कहा है–

तिल भर गोश्त खाय के कोटि गौ दे दान।
काशी करौंत ले मरे, फिर भी नर्क नादान।।

नानक साहब कहते हैं–

जे रक्त लागे कापड़ा, जामा होय पलीत।
जे रक्त पीवैं नानका, सो कस निर्मल चित्त।।

सो अगर खून का एक टीका भी लग जाता है तो कपड़ा दागी हो जाता है। और दो दो सेर मांस पेट में डाल लेते हैं। वह पेट नहीं वह तो कब्रिस्तान है। पेट को कब्रिस्तान ही बना लिया है। मुर्दे कब्रों में गाड़े जाते हैं। तुम सत्संगी हो। इन चीजों से बचकर रहो। दो ही सम्प्रदाय हैं–एक आस्तिक और दूसरा नास्तिक। तीसरा न हुआ न हो। आस्तिक बनो और नास्तिक न बनो।

दूसरों की निंदा करना भी महापाप है। दूसरों को दोष लगाना भी महापाप है। उनकी गति जो होती है वह तुमने देखी होगी और भी देख लोगे। आप कभी भी निंदा ना करो। शांति से अपना टाइम बिताओ। अपने विचार अच्छे रखा करो। सो कहा है–

सुख सागर में आय के, मत जाइए हंस पियासा।

क्या अब तुम सुख सागर को समझ गए या और भी बाकी रह गया है? अब मैंने अपनी बात भी बता दी कि मैं भी गिर गया था। पर गिरा था केवल दस बीस मिनट के लिए। फिर मैं संभल गया। किसने संभाला? यह तो पता नहीं। मेरी आत्मा ही बोल पड़ी। वह आत्मा बोली तो उसने किसको कही ये बातें? अब आप सोचो। वह आत्मा तो चेतन है। यह आत्मा इस जड़ को कहती है। आप पूछोगे कि वह जड़ क्या है? सो तुम्हारा सांस भी जड़ है। तुम्हारा जीव है, यह भी जड़ है। अब तो बोलेगा कि ये जड़ कैसे है? ये सांस आता है। ये जड़ है। दस प्राण जड़ हैं। ये पीछे बने हैं। मैं तो यहां तक कहता हूं कि जो तीन गुणों की हद में हैं वे सारे ही जड़ हैं। इससे आगे जाकर शब्द तो जड़ है नहीं और तो सारे ही जड़ हैं। शब्द ही चेतन है। बाकी सब जड़ हैं। उन जड़ों में टाइम बिताओगे तो कभी स्वर्ग मिल जाएगा, कभी वैकुण्ठ मिल जाएगा। अगर चेतन में चले जाओगे तो स्वर्ग वैकुण्ठों से आगे चले जाओगे। सच्ची मुक्ति मिल जाएगी। मुक्ति शब्द में ही है। जब सच्ची मुक्ति

हो जाएगी तो उद्धार हो जाएगा। फिर कभी भी आना नहीं पड़ेगा।

एक प्रेमी ने मुझसे प्रश्न किया था कि आप कहते हो कि बूंद सागर में मिल जाती है। फिर वह सागर का रूप धारण कर लेती है। मैंने कहा–हां पर चार मुक्ति होती हैं। सालोक, जिसके लोक में चले गए। सामीप्य जब पास में ही आ बैठे सारे। सायुज्य सारूप उसके रूप बन गए। अब पानी की बूंदे पानी में पड़ गई तो वह पानी ही बन गई। यह वापिस आ सकती है? सो यह भी मुक्ति नहीं है। संत इन चारों मुक्तियों से आगे की बातें करते हैं और चार ही वाणियां होती है–परा, पसन्ती, मध्यमा और बैखरी। ये वाणी भी नहीं हैं। वे कहते हैं–

चौवाणी, हम न मानी।

इसी प्रकार चारों मुक्तियां भी नहीं है। ये मुक्तियां भी उरले व्यवहार में हैं। इन मुक्तियों से आगे जाते हैं। जो शब्द–शब्द में समा जाता है फिर उसको छोड़ नहीं सकता है।

बूंदे तो सूर्य की गर्मी को पकड़ कर फिर भी वापिस आ जाती हैं। वर्षा होती है समुद्र के अंदर से उठकर वह फिर आ जाती है। सो हम भी जाकर आ जाते हैं। स्वर्ग–वैकुण्ठों से भी आए। पर कई लोग कहते हैं कि अगर वे चले गए और फिर नहीं आये तो यह देश तो उजड़ जाएगा और वह बस जाएगा। फिर वहां पर तो भीड़ हो जाएगी। मैं कहता हूं–यह फिक्र आप कोई न करो। यह फिक्र तो मालिक ने करनी है। वहां क्या बात है? भीड़ तो न यहां होगी और न ही वहां होगी। वह मालिक का फिक्र है। तुम मालिक मत बनो। जैसा तुम्हारा ख्याल है। रहने का है तो आओगे और जाने का है तो चले जाओगे।

जैसा ख्याल, वैसा हाल।

जैसा ख्याल होगा, वैसा ही भोगना पड़ेगा। सो अपने ख्याल ऊंचे रखो, विचार पवित्र रखो। आप प्रश्न कर सकते हो कि आप

अब तो कह रहे थे कि मैं भी नीचे आ गया था। अब आप और बात कहते हो। क्या आप उस मंजिल पर पहुंच गए हो? इसे कौन बतायेगा?

दो ढेले चले पड़े। एक पत्थर का और एक मिसरी का ढेला था। वे गंगा जी नहाने चले गये। मिसरी वाला ढेला पिंघल गया। अब पत्थर वाले ढेले ने कहा कि हम पिंघत गए भई। मिसरी वाले ढेले ने कहा–जो पिंघल गए हैं वे तो बोलते ही नहीं हैं। तू तो पिंघला ही नहीं है। सो जो पिंघल जाते हैं, तो बोल कर क्या करेंगे, पर आप फिर प्रश्न कर सकते हो कि आप क्यों बोलते हो?

यह मेरे वश की बात नहीं है। यह तो मेरे गले में ढोल डाल रखा है। गले पड़ा ढोल तो बजाना पड़ता है। मैं बड़ा भारी ख्याल रखता हूं कि तेरे सत्संगी आए हैं इनको नाखुश होकर नहीं जाना चाहिए। मेरे से अकेले में मिलने के लिए कितनों का दिल करता है? काफी आदमियों का करता होगा। मैं सब से मिलता हूं मैं ऐसा पापी नहीं हूं कि आपसे न मिलूं। मेरे दरबार में सत्संगी जो सतलोक में पहुंचे हुए हैं उनके लिए भी वही जगह है, पापियों के लिए भी वही जगह है। जो पापी नहीं आएगा तो धर्मात्मा कैसे बनेगा? सो संतों का दरबार तो धोबी का घाट होता है। संतों के दरबार में तो भंगी का काम होता है। संत तो चौकीदारी का काम करते हैं। संत के तीन काम होते हैं–धोबी, भंगी और चौकीदार का काम।

आप समझते हो कि मैले कपड़े धोबी के घाट पर जाते हैं। वह यह नहीं कहता कि यह तेली का कपड़ा है या हलवाई का कपड़ा है। दोनों का धोता है। वह सोचता है कि इसके अंदर सफेदी है। दो भट्ठियों में सफेदी आ जाएगी। तो संत सतगुरु भी जानता है कि यह पापी है। पर है तो मालिक का बनाया हुआ

बन्दा। इसकी आत्मा पर मैल चढ़ा हुआ है। खोटे कर्मों का मैल है। यह मैल उतरते ही वह भी पवित्र है। मैंने दिन में बताया था कि कितनों का ही मैल उतर गया है। बाल्मीक, सदन कसाई, वैश्या भांडली। ये कैसे थे? अजामिल जी क्या थे? क्या उनके मैल नहीं उतरे? आज लोग उनके नाम लेकर सोते हैं। इसलिए–

संतों शरणै जाइए म्हारी हेली, कोटि कर्म कट जां।

संतों की शरण में जाने से कोटि कर्म कट जाते हैं। करोड़ों जन्मों के पाप कट जाते हैं। कैसे कटते हैं? जैसे धोबी भट्ठी चढ़ा कर कपड़े का मैल काट देता है। जिस तरह गंदी नालियों को भंगी पानी डाल कर अंदर से साफ कर देता है और हंसता खेलता हुआ अपने घर को आ जाता है। जैसे चौकीदार पहरा देता है अपने गांव का। मैं लोगों को जाल में डालने वाला नहीं हूं। कोई भी आदमी हो। तुम अगर भला चाहते हो तो गरीबों की मदद किया करो। दुखी जीवों की मदद किया करो। दो घड़ी मालिक को याद किया करो। गरीब की मदद करने वाले की कभी हार नहीं हो सकती है। धर्म–ध्वजा धसकती नहीं है। वह तो यूं ही लहराती है। चाहे सारा देश दुश्मन बन जाओ। सो धर्म ध्वजा को मत धसकने दो। अपना काम किया करो। भजन बंदगी में मस्त रहा करो। मेरा मुंह देखने से नहीं तिरोगे। मेरे वचनों को हृदय में जमाने से तिरोगे। आप उस लाइन पर चलो, तिर जाओगे। आपको सीधी बातें बता दी हैं। चलो तो तुम्हारी मर्जी है न चलो तो तुम्हारी मर्जी।

।। राधास्वामी ।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

अक्तूबर/नवम्बर मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1.	गाधली	21 नवम्बर -	27 नवम्बर
2.	झरझीला	28 नवम्बर -	04 दिसम्बर
3.	नजफगढ़	05 दिसम्बर -	11 दिसम्बर
4.	हरसाना	12 दिसम्बर -	18 दिसम्बर
5.	सिचावली	19 दिसम्बर -	25 दिसम्बर

विशेष सूचना

'राधास्वामी सन्त सन्देश' पत्रिका की वार्षिक सदस्यता 31.12.2005 को समाप्त हो रही है अगले वर्ष 2006 का वार्षिक शुल्क 40/–रूपये, 5 वर्षीय शुल्क 200/–रूपये एवं आजीवन शुल्क 500 रुपये है, नकद, मनीआर्डर एवं बैंक ड्राफ्ट द्वारा सचिव, राधास्वामी सत्संग भवन (दिनोद), रोहतक रोड़, भिवानी –127021 को अपना शुल्क 31.12.05 तक अवश्य भेजकर रसीद प्राप्त कर लें।

कृपया अपना पता पूरा और साफ लिखें जिससे पत्रिका ठीक समय पर मिल सके।

सत्संग

महर्षि शिवव्रत लाल जी

सत्संग का बल पुरुषार्थ से बड़ा होता है। पुरुषार्थ में तो मनुष्य का अहंकार सम्मिलित रहता है जो उसको असली ध्येय के प्राप्त करने में बाधक होता है। सत्संग में सत् का संग रहता है जो संस्कार रूप में मन में स्थित होकर अवसर पाकर अपना काम कर लेता है। जो व्यक्ति गंगा में स्नान करेगा, पहले गंगा के जल को उसके शरीर के मैल के साथ रगड़ करनी पड़ेगी। फिर कुछ समय इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति साधु के साथ लड़ाई करता है उसकी बुरी भावनायें उभर खड़ी होती हैं और उसको शुभ वासनाओं व शुभ कर्मों की ओर शीघ्र आकर्षित नहीं होने देती। वह भांति-भांति की धारें हल्की होती जायेंगी, उसमें पश्चाताप उत्पन्न होगा। खैंचातानी और पश्चाताप ही कर्म को दग्ध करते हैं और इसी के आधीन एक समय ऐसा आ जाता है कि जब मनुष्य रगड़ा खाते-2 तनिक संभल जाता है। फिर उसमें सच्चाई की फुरणा होने लगती है और फिर वह ठिकाने आ जाता है। सूर्य के मिलाप से अग्नि-उत्पादक शीशे के मैल में क्षोभ होना आवश्यक है। नहीं तो वह कैसे निर्मल हो सकता है। इसी कारण बुरे मनुष्य के भाव साधू या ईश्वर के समीप जाने से उभर खड़े होते हैं। उनमें जोश और क्षोभ आता है और फल मिलने लगता है और फल मिलने से फिर सम्भव है कि शुभ कर्म अपना प्रभाव उत्पन्न करें। इसी कारण कहा गया है- ''साधु से झगड़ा भला साकित संग न मेल।'' यह नियम है कि जिस को याद करता है वह भी उसको याद करता है। जो ईश्वर का सुमिरन करते हैं ईश्वर उनका भी सुमिरन करता है। जो गुरु का नाम जपते रहते हैं, गुरु भी उसका ध्यान रखता है। यह पारस्परिक सम्बन्ध है।

तुलसी कंवलन जल बसे, रवि शशि बसे आकाश।
जो जाके मन में बसे, सो ताही के पास।।

अनमोल वचन

सारा संसार अन्धा आया और अन्धा ही चला गया। परमात्मा को किताबों में पढ़ लिया अथवा महात्माओं से सुन लिया, न कभी अन्दर गये और न दर्शन किए।

—सन्त कबीर साहिब जी

परमात्मा रंग रूप और रेखा से परे हैं। इसलिये बाहरी पूजा-पाठ स्नान तीर्थयात्रा से उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता। उसे केवल मनुष्य शरीर के अन्दर ही पाया जा सकता है।

—सन्त तुलसी साहिब

जिस तरह पारस के संग से लोहा सोना होता है, उसी तरह सन्त-समागम से नारायण प्राप्त होता है। जिस तरह भ ंगी के ध्यान से कीट भी उसी का रूप हो जाता है। उसी प्रकार सन्त के ध्यान से मनुष्य को परमेश्वर की उपलब्धि होती है।

—सन्त नामदेव

ज्ञान-सार

मकान यहां बना रहे हो, सजावट यहां कर रहे हो। संग्रह यहां कर रहे हो पर खुद मौत की तरफ भागे चले जा रहे हो। जहां जाना है, पहले उसको ठीक करो।

निश्चित समय पर चलने वाली गाड़ी के लिये भी जब पहले से सावधानी रहती है, फिर जिस मौत रूपी गाड़ी का कोई समय निश्चित नहीं, उसके लिये तो हरदम सावधानी रहनी चाहिए।

जन्मदिन आने पर बड़ा आनन्द मनाते हैं कि हम इतने वर्ष के हो गये। वास्तव में इतने वर्ष के हो नहीं गये, प्रत्युत इतने वर्ष मर गये अर्थात् हमारी उम्र में से इतने वर्ष कम हो गये और मौत नजदीक आ गयी।

सत्संग भावांश दिनोद 1.10.2005

भक्ति के मार्ग में दो पंख सेवा और प्रेम बताए हैं। जो यह दोनों काम नहीं कर सकता है वह सत्संग के काबिल नहीं हो सकता है। स्वामी जी महाराज राधास्वामी नाम को प्रगट करवाने वाले थे। यह कहो कि उन्हों ने पौधा लगाया था। उसको ''राधास्वामी'' नाम तो हुजूर महाराज जी ने दिया था। उन्होंने बहुत सी पुस्तकें लिखीं, सत्संग दिए। उनका पूरा जीवन ही सेवा और प्रेम में बीता। उन्होंने जो पुस्तकें लिखीं प्रेम से शुरू करके प्रेम पर ही खत्म कीं, सेवा से शुरू करके सेवा पर ही खत्म कर दीं। लेकिन उस सेवा व प्रेम के बीच में जो भक्ति का पाठ पढ़ाया गया, उसमें सब कुछ कह दिया। सुरत-शब्द का योग कह दिया। ये दो ऐसे पहिए हैं। इसके साथ हमारी परमार्थिक गाड़ी चलती है। आज टी.वी. में देखो। धाएं-2 करके सब लगे हैं। सुबह से शाम तक कोई क्षण खाली नहीं मिलेगा। सबके सब धर्म का प्रचार करते हैं। परन्तु जाकर देखो, उनमें सत्सगी नाम मात्र के ही मिलेंगे। अब यही बात है बीज तो बहुत बोया जाता है। सारा बीज जमीन में उगकर फलदायक नहीं हुआ करता है।

सत्संग समझने वाले लोग बहुत कम होते हैं। संग जिसका खराब हो गया उसका जीवन ही बर्बाद हो गया। जीवन ही नहीं मैं कहूंगा कि उनके असंख्य जीवन ही बर्बाद हो गए। अपना एक प्रेमी शब्द गाया करता है। वह कहता है कि-

पापी मिलो हजार, नुगरा कोई मत मिलियो।

नुगरा वह नहीं होता है, जिसने गुरु धारण नहीं किया है।

नुगरा तो वही होता है जो गुरु धारण करके उसके सिद्धान्तों का व मर्यादा का व उसके बताए नियमों का उल्लंघन करता है। अपने इस पापी पेट के लिए वह अपने खून को भी धोखा दे देता है। ऐसा आदमी किसी का भी नहीं होता है। वह अपनी इज्जत को बेचकर भी भक्ति के नाम को बदनामी बान्ध देता है। जिसके दिल में लालच भरा है, भक्ति के मार्ग में कभी कामयाब नहीं हुआ करता है। हां, चार दिन की चमक चान्दनी में खुश हो जाएगा, पर उसके साथ क्या जाएगा? जिस दिन आखरी वक्त आएगा, फैसला उसके हाथ में नहीं रहेगा। महापुरुषों की यही एक बात थी। उन्होंने जीवन भर जो कहा, उसी का पालन किया। कमाई की, उस चीज को वे दुनियादारों के लिए लिखकर चले गए कि ऐसा मत करना। परन्तु दुनियादारों की मति मारी जाती है। ये माया के जाल में बन्धे होते हैं। आंखों पर माया के जाल का चश्मा लगने के बाद में आदमी अन्धा हो जाता है। उसको यह पता नहीं होता है कि तू पाप कर रहा है। वह तो पाप को ही पुण्य समझकर करने लग जाता है वह सोचता है कि मैं पुण्य कर रहा हूं। ऐसे लोग गले काटने से झिझकते नहीं हैं। क्या वह सत्संग है? क्या वे सत्संगी हैं? क्या वह सत्संग उनका कल्याण करेगा? क्या वह उनके काम आएगा? ये सवाल यदि वे अपने आप से कर लें तो उनको जवाब मिलेगा कि उनका अन्जाम बहुत बुरा होगा। वे अब खुश हो लेंगे अगला जन्म मिलेगा, तो वे कोढ़ी कंगले बनकर आएंगे, लंगड़े बनकर आएंगे टांगे नहीं होंगी। अन्धे बनकर आएंगे दूसरों के सहारे पर चलेंगे। गर्भ से ही बुत बनकर आएंगे, पड़े रहेंगे, कोई नहीं पूछेगा। जो जन्म से ही ऐसे होकर आते हैं, वे ऐसे ही गुरुद्रोही, पापी व दुष्ट होते हैं, जो बातों को समझते नहीं है। इसीलिए सन्तों ने कहा है कि भैया, सेवा कर सेवा से ही कर्म कटेंगे। जब कर्म कट जाएंगे तो फिर यह भक्ति के मार्ग में लग जाएगा। सेवा व प्रेम से कर्म कटते हैं। ■

''बात जनवरी 2001 की है उस समय मेरी ड्यूटी जम्मू कश्मीर में थी। मेरी धर्मपत्नी (सरोज देवी) अचानक मानसिक तौर पर बीमार हो गई। बीमार भी ऐसी हुई कि पांच साल लगातार दवाई खाने से भी ठीक नहीं हुई। देश के कौने-2 से मैंने दवाईयां दिलवाईं। लेकिन आशा निराशा में ही रही और ठीक होने का नामोनिशान कहीं कोसों दूर भी नहीं था। मैंने सब उम्मीदें छोड़ दी थीं और उसको सिर्फ भगवान् भरोसे ही छोड़ दिया कि जो भगवान् करेंगे वही हमें मंजूर होगा। मेरी बहन जो कि आज से 10 साल पहले नाम ले चूकी है वह गांव चिड़ी (रोहतक) में रहती है। वह जब इस बार घर पर आई तो कहा कि चलो, दिनोद ले चलती हूं। वहां सतगुरु जी के दर्शन मात्र से ही यह ठीक हो जायेगी। मैं, मेरी बहन और मेरी धर्मपत्नी दिनोद धाम पहुंचे तो पता चला कि गुरु जी नेपाल यात्रा पर गए हुए हैं और 10 दिन बाद लोटेंगे फिर मुझे फोन नम्बर दिया गया कि पता करते रहना। मैंने 28 अप्रैल 2005 को फोन किया तो पता चला कि सतगुरु जी धाम पर आ चुके हैं। मैंने अपनी बहन को बुलाया और हम तीनों 29 अप्रैल 2005 को दिनोद धाम पहुंचे। वहां हमें गुरु दर्शन हुए तो मेरी धर्म पत्नी उस दिन से 50 प्रतिशत ठीक हो गई। 30 अप्रैल तक मेरी छुट्टियां थी तो आगे तीन महीने तक सत्संग में आने की कोई उम्मीद ही नहीं थी। तब तो मैं अपनी धर्मपत्नी को सतगुरु भरोसे छोड़कर ड्यूटी पर चला गया।

18 जुलाई 2005 को मेरी बहन ने फोन किया कि 19 जुलाई को भिवानी में सत्संग है और मैं भाभी को साथ लेकर जाऊंगी और वह उसे साथ ले गई। उस दिन गुरु पूर्णिमा थी। उन्होंने गुरु दर्शन किए और मेरी धर्मपत्नी को गुरु नाम मिला जैसे ही वह सत्संग से बाहर आई और दोनों बस स्टैण्ड पर पहुंचीं तो मुझे फोन किया और कहा कि मैं आज से बिल्कुल ठीक हो गई हूं और अब से दवाई लेना बन्द करूंगी। वह दवाईयों की जो अलग-2 गठरी रखती थी, घर आकर वे सभी दवाईयां फिकवा दी और सबसे कह दिया कि आज गुरु जी के आशीर्वाद से वह बिल्कुल ठीक हो गई है। इसीलिये कहते हैं कि गुरु दर्शन साक्षात्कार भगवान् दर्शन होते हैं।

सतगुरु की कृपा से मेरी बहन के दिखाए हुए रास्ते के कारण आज वह बिल्कुल ठीक है। महाराज जी की कृपा से आज डॉक्टरों के चक्कर काटने बन्द हो गए हैं तथा पूरे परिवार ने चैन की सांस ली है। मैं तथा मेरा परिवार चाहते हैं कि महाराज जी का आशीर्वाद सदा हमारे ऊपर बना रहे। वे सबको रास्ता दिखाएं तथा सबकी मनोकामना पूर्ण करें। सतगुरु के चरणों में सत-सत प्रणाम !''

-ना. सुबेदार जगदीश चन्द्र कौशिक
गांव पहरावर (रोहतक)

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

कांटों की झाड़ी (कहानी)

एक मुंह के मीठे और दिल के खोटे आदमी ने बीच रास्ते में कांटों की झाड़ी उगने दी, जो दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ने और फैलने लगी। उधर से हर आने-जाने वाले व्यक्ति ने उसको बहुत लानत-मलायत दी और हिदायत दी कि इस कांटों की झाड़ी को उखाड़ दे, क्योंकि इससे न सिर्फ तुझी को बल्कि सब को तकलीफ होती है। मगर उसने एक न सुनी। लोगों ने उसकी इस हरकत से परेशान होकर हाकिम के पास प्रार्थना की। हुकम हुआ कि फौरन कांटों की झाड़ी को उखाड़ दे। मगर वह शख्स बराबर टाल-मटोल करता रहा। जब उसको कहा जाता तो यही जवाब देता कि कल उखाड़ दूंगा, मगर उसको न उखाड़ना था न उखाड़ा, यहां तक कि झाड़ी की जड़ खूब मजबूत हो गई। एक दिन हाकिम ने उससे कहा कि ऐ वायदा खिलाफ ! हमारी आज्ञा का पालन कर। तू जो रोज कल कहता रहता है, तो जान ले कि जिस कदर तू विलंब करेगा, बुराई के वृक्ष की जड़ मजबूत और पक्की होती जायेगी और उखाड़ने वाला कमजोर होता जायेगा। वृक्ष मजबूत और तू कमजोर हुआ जाता है। अत: जल्दी कर और अवसर को हाथ से न जाने दे।

मौलाना साहब फरमाते हैं-ऐ प्यारे ! तेरी हर बुरी आदत कांटों की झाड़ी है। तू अपनी बुरी आदत से तंग आ चुका है लेकिन फिर भी तेरी आंखें नहीं खुलती। दूसरों को तकलीफ की, जो तेरी ही बुरी आदतों की वजह से है, तू परवाह नहीं करता तो खैर जाने दे, पर क्या तुझे अपना जख्म भी नहीं महसूस होता?

■

भोग (कहानी)

जैसे अज्ञानी मनुष्य भोगों को सुख के कारण समझकर तथा उसमें आसक्त होकर भी उन्हें भोगने की चेष्टा करते हैं और परिणाम में महान दुख प्राप्त करने होते हैं उन्हें भोगने से उनमें आसक्ति बढ़ती है, आसक्ति से काम, क्रोधादि अनर्थों की उत्पत्ति होती है। परिणाम यह होता है कि उनका जीवन पापमय हो जाता है और उसके फलस्वरूप उन्हें इस लोक और परलोक में नाना प्रकार के भयानक ताप और यातनाएं भोगनी पड़ती हैं।

विषय भोग के समय मनुष्य भ्रमवश जिन स्त्री प्रसंगादि भोगों को सुख का कारण समझता है, वे ही परिणाम में उनके वीर्य, बल, आयु तथा मन बुद्धि प्राण और इन्द्रियों की शक्ति का क्षय करके और शास्त्र विरूद्ध होने पर तो परलोक में भीषण नरक यन्त्रणादि की प्राप्ति कराकर महान दुख के हेतु बन जाते हैं। इसके अतिरिक्त एक बात यह है कि अज्ञानी मनुष्य जब दूसरे के पास अपने से अधिक भोग-सामग्री देखता है, तब उसके मन में ईर्ष्या की आग जल उठती है और वह उससे जलने लगता है।

सुखरूप समझकर भोगे हुये विषय कहीं प्रारब्धवश नष्ट हो जाते हैं तो उनके संस्कार बार-बार उनकी स्मृति कराते हैं और मनुष्य उन्हें याद कर करके शोक मग्न होता, रोता-बिलखता और पछताता है।

विषय-भोग वास्तव में अनित्य, क्षण भंगुर और दुखरूप ही हैं, परन्तु विवेकहीन अज्ञानी पुरुष इस बात को न जान मानकर उनमें रमता है और भांति-भांति के क्लेश भोगता है, किन्तु बुद्धिमान विवेकी पुरुष उनकी अनित्यता और क्षण भंगुरता पर विचार करता है तथा उन्हें काम-क्रोध पाप-ताप आदि अनर्थों में हेतु समझता है और उनकी आसक्ति के त्याग को अक्षय सुख की प्राप्ति में कारण समझता है, इसलिये वह उनमें नहीं रमता।

इससे यह बतलाया गया है कि शरीर नाशवान है-इसका वियोग होना निश्चित है और यह भी पता नहीं कि यह किस क्षण नष्ट हो जायेगा, इसलिए मृत्युकाल उपस्थित होने से पहले-2 ही काम, क्रोध पर विजय प्राप्त कर लेनी चाहिये। ■